कंठ बाहों वली वली, अनेक विधे रंग रली।
लिए अमृत मुख मेली, पिए रस भरी भरी।। ९ ।।

फेर-फेरकर गले में हाथ डालते हैं। अनेक प्रकार से मिलते हैं तथा मुख से मुख मिलाकर अमृत रस का पान करते हैं।

रस घणो उपजावती, सखी मीठड़े स्वर गावती।
नव नवा रंग ल्यावती, इंद्रावती अंग धरी धरी।। १० ।।

इस तरह से रामत में खूब आनन्द आ रहा है। सखियां मीठे स्वरों में गा रही हैं। श्री इन्द्रावतीजी अंग में नए-नए विचार लेकर खेल खिलाती हैं।

॥ प्रकरण ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ ५०८ ॥

राग पंचम मारू

रामत गढ तणी रे, हाथ मांहें हाथ दीजे।
बल करीने सहु ग्रहजो बांहोंडी, तो ए रामत रस लीजे।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हाथ से हाथ पकड़ कर हम किले जैसा रूप बनाकर रामत खेलें। तुम सब ताकत से बांहों को पकड़ रखना तो रामत का आनन्द आएगा।

प्रथम पाधरू कहूं रे सखियो, ए रामत छे मदमाती।
दोडी न सके तेणी बांहोंड़ी न छूटे, ते आवसे पाछल घसलाती।। २ ।।

पहले मैं तुमको साफ-साफ समझा देती हूं कि यह खेल मस्ती से भरा है। जो नहीं दौड़ सकेगी उसका हाथ तो नहीं छूटेगा, पर गिरकर पीछे-पीछे घिसटती हुई आएगी।

ते माटे बंध बांहों खरो ग्रही, करजो जोरमां जोर।
पछे दोडसो त्यारे नहीं रे केहेवाय, थासे अति घणो सोर।। ३ ।।

इस वास्ते बांहों को मजबूती से पकड़ना और जोर से ताकत लगाना। यदि दौड़ में पीछे रह जाओगी तो बड़ी हंसी होगी।

पेहेली चाल चालो कीडीनी, हलवे पगलां भरजो।
पछे वली कांईक अधकेरां, वधतां वधतां वधजो।। ४ ।।

पहली चाल चींटी की तरह चलो। फिर धीरे-धीरे चाल बढ़ाओ। फिर चाल बढ़ाते-बढ़ाते खूब बढ़ाओ।

वली कांईक वृध पामतां, मचकासूं म हालजो।
हजी लगे आकला म थाजो, लडसडती चाल चालजो।। ५ ।।

और इससे भी अधिक बढ़ाने पर मस्ती में नहीं चलना। अभी से ही जल्दी नहीं करना। लटकती-मटकती चाल चलना।

हवे कांईक पग भरजो प्रगट, सावचेत सहु थाजो।
साथ सकल तमे आप संभाली, मुखडे पुकारीने गाजो।। ६ ।।

अब सब सावधान होकर धीरे-धीरे पग बढ़ाओ। फिर एक ही स्वर से गर्जना करके भागो।

Nirjanand App

लटके चटके छटके दोडजो, रखे पग पाछां देतां।
हांसी छे घणी ए रामतमां, दोड तणो रस लेतां।। ७ ।।

लटकती, चटकती और छटकती चाल से दौड़ना। पांव पीछे नहीं हटाना। इस रामत में दौड़ने का ही आनन्द है और हंसी है।

कहे इंद्रावती ए रामतडी, मारा वालाजी थई अति सारी।
दोड करता तमे पाछूं नव जोयुं, अमे बांहोंडी न मूकी तमारी।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! यह रामत बहुत अच्छी हुई है। दौड़ते समय आपने पीछे नहीं देखा और हमने भी आपकी बांह नहीं छोड़ी।

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ ५१६ ॥

राग श्री काफी

रामत करतालीनी रे, एमा छे वलाका विसमा।
बेसवूं उठवूं फरवूं रमवूं, ताली लेवा साम सामा।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हाथ से ताली बजाकर रामत करने में दावपेंच कठिन हैं। इसमें—बैठना, उठना, फिरना, खेलना और आमने-सामने आकर ताली बजाना है।

तम सामी अमे ऊभा रहीने, हाथ ताली एम लेसूं।
बेसंता उठता फरता, सामी ताली देसूं।। २ ।।

हे वालाजी! आपके सामने खड़े होकर मैं हाथ की ताली लूंगी, फिर बैठकर, उठकर, घूमकर, फिर सामने आकर ताली दूंगी।

बेसंता ताली दईने बेसिए, उठंता लीजे ताली।
फरता ताली दई करीने, वचे रामत कीजे रसाली।। ३ ।।

बैठते समय ताली देकर बैठना है और उठते समय ताली लेकर उठना है। घूमते समय ताली देकर घूमना है। इस प्रकार की रामत सबके बीच में खेलूंगी।

रामत करता अंग सहु वालिए, सकोमल जोड सोभंत।
अंग वाली वचे रंग रस लीजे, भंग न कीजे रामत।। ४ ।।

खेलते समय सब अंग मोड़िए। इस तरह से सुन्दर जोड़ी शोभा देगी। अंग मोड़ते समय खेल में आनन्द लीजिए और खेल में भी रुकावट नहीं आवे।

ए रामतडी जोई करीने, सहु साथने वाध्यो उमंग।
सहु कोई कहे अमे एणी पेरे, रमसूं वालाजीने संग।। ५ ।।

इस रामत को देखकर सब सुन्दरसाथ के मन में खेलने की उमंग बढ़ गई तथा सब कहने लगीं कि हम भी इस प्रकार वालाजी के साथ खेलेंगे।

साथ कहे वाला रमो अमसूं, ए रामत सहु मन भावी।
सहुना मनोरथ पूरण करवा, सखी सखी प्रते लेओ रंग आवी।। ६ ।।

सब सखियां कहने लगीं, हे वालाजी! हमारे साथ भी खेलो। यह खेल सबको अच्छा लगा है, इसलिए सबकी इच्छा पूरी करने के लिए एक-एक सखी से आनन्द लो।

Nijanand App